Economic Factors of Economic Growth

आर्थिक संवृद्धि एक जटिल प्रक्रिया है जिसे विभिन्न प्रकार के कारकों निर्धारित करती है। निर्धारक कारकों को दो भागों में बांटा जाता है।

(1) आर्थिक कारक

(2) गैर-आर्थिक कारक

आर्थिक संवृद्धि को निर्धारित करनेवाले आर्थिक कारक निम्नलिखित है –

(1) उत्पादन का संगठन एवं उत्पादन फलन — उत्पादन के विभिन्न साधनों (श्रम, पूंजी, ज्ञान एवं तकनीकी) का संगठन कर उत्पादन किया जाता है। तकनीकी प्रगति के कारण सम-उत्पाद वक्र (Production Possibility Curve) ऊपर की ओर खिसक जाती है जो आर्थिक संवृद्धि का प्रतीक होता है। इस संदर्भ में स्थिर गुणांक तथा परिवर्तनशील गुणांक वाले दो तरह के उत्पादन फलन पाये जाते हैं जिन्हें हैरड एवं सोलो ने प्रयुक्त किया है जो निम्नलिखित है -

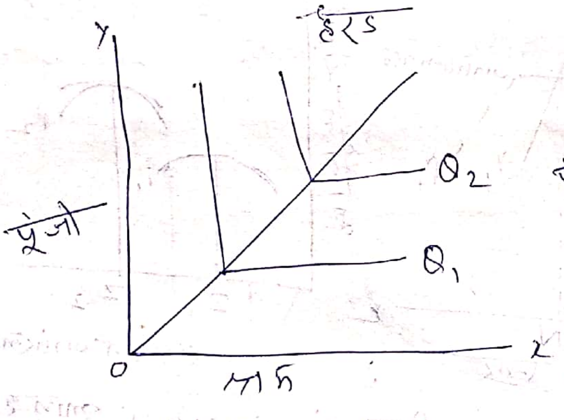

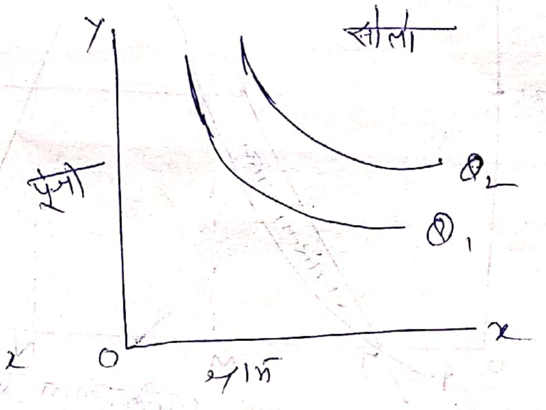

ऊपर के चित्र में सम उत्पाद वक्र का Q_1 से Q_2 पर प्रस्थापन करना आर्थिक संवृद्धि का सूचक है। हैरड ने स्थिर गुणांक वाला सम-उत्पाद वक्र दिया जबकि सोलो ने परिवर्तनशील गुणांक वाला सम-उत्पाद वक्र दिया। उत्पादन संगठन के सही तरीके से होते ही उत्पादन में भारी मात्रा में वृद्धि होती है जिससे आर्थिक संवृद्धि में तेजी आती है।

(2) जनसंख्या वृद्धि — आर्थिक विकास में जनसंख्या प्रेरक तथा बाधक दो प्रकार की भूमिका निभाती है। जनसंख्या वृद्धि से श्रमिक की आपूर्ति होती है जो कि सक्रिय उत्पादन साधन है। जनसंख्या वृद्धि से बाजार का आकार बढ़ता

Scanned with CamScanner

बढ़ता है तथा मांग में विस्तार होता है। माल्थस के अनुसार जनसंख्या में ज्यामितीय पद्धति (1:2:4:8) से वृद्धि होती है जबकि अनाज उत्पादन में अंकगणितीय पद्धति (1:2:3:4:5) से वृद्धि होती है। इसलिए जनसंख्या बढ़ने पर खाद्य समस्या उत्पन्न हो जाती है अतः जनसंख्या वृद्धि आर्थिक विकास में बाधक होता है लेकिन optimum theory of population में जनसंख्या वृद्धि को प्रेरक तत्व माना जाता है जब तक कि जनाभाव को मिटाते रहती है। नेलसन महोदय ने "जनसंख्या जाल" को आर्थिक संवृद्धि के बाधक तत्व माना है। बोल्डिंग महोदय के अनुसार आर्थिक विकास में तेजी आने पर optimum population का आकार बदलता जाता है फिर एक ऐसा समय आता है जब जनसंख्या के optimum size को स्थिर रखना पड़ता है और इसी अनुरूप जनसंख्या नीति बनायी जाती है जिससे आर्थिक विकास होता है इसे निम्न चित्र से प्रदर्शित करते हैं —

चित्र 1

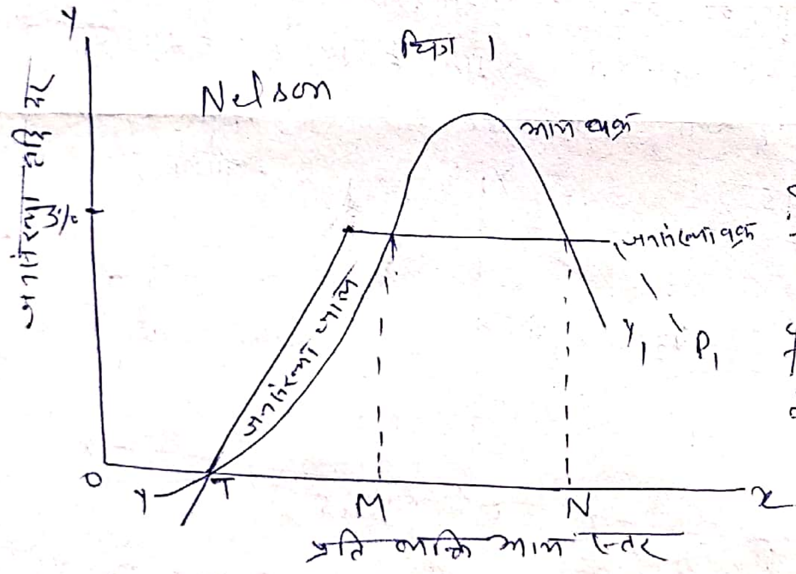

चित्र - 2

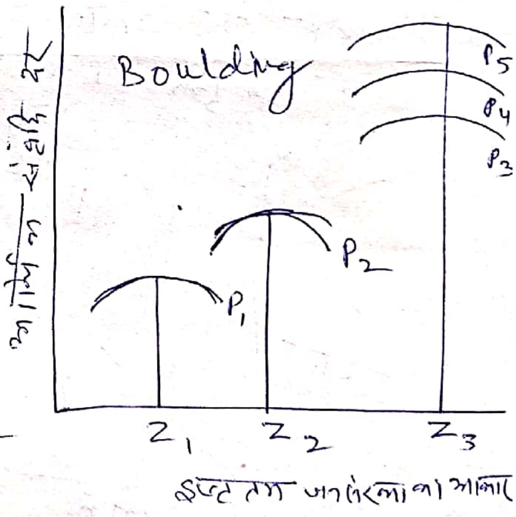

चित्र 1 में T तथा M के बीच जनसंख्या वृद्धि दर आय वृद्धि दर से ऊँची है इसलिए आर्थिक संवृद्धि में बाधक तत्व के रूप जनसंख्या कार्य करती है। चित्र 2 में OZ_1 इष्टतम जनसंख्या का आकार बदल कर OZ_2 से OZ_3 पर चला जाता है लेकिन OZ_3 पर इसे स्थिर रखना पड़ता है तभी आर्थिक विकास होता है।

(3) प्राकृतिक संसाधन —

आर्थिक संवृद्धि का अर्थ है अधिक उत्पादन। अधिक उत्पादन प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर करता है। और इन प्राकृतिक संसाधनों का पूर्ण उपयोग कर ही उत्पादन बढ़ाया जा सकता है जिससे आर्थिक संवृद्धि दर बढ़ेगा।

Scanned with CamScanner

(4) पूंजी संचयन —
समय परिवर्तन के साथ पूंजी के भंडार में लगातार वृद्धि होती रहे पूंजी संचयन कहते है। पूंजी संचयन दर अगर ऊँची हो तो अर्थव्यवस्था में वृहद स्तर पर उत्पादन होगा तथा श्रम विभाजन एवं विशिष्टीकरण के लाभ मिलेंगे। पूंजी निर्माण बचत पर निर्भर करता है जिसका सूत्र निम्न है —

$$K = \frac{S}{K}$$

जहाँ K = पूंजी निर्माण दर
S = बचत
K = पूंजी की मात्रा

बचत में वृद्धि करने के बाद बचत का विनियोग में परिवर्तन करना होगा तब आर्थिक संवृद्धि में तेजी होगी।

(5) श्रम विभाजन, विशिष्टीकरण एवं वृहद् उत्पादन —
श्रम एवं पूंजी के उपयोग में विशिष्टीकरण लाने तथा श्रम विभाजन के उपयोग करने से नये नये मशीनों का उपयोग होने लगता है और उत्पादन का पैमाना वृहद हो जाता है। वृहद उत्पादन पैमाने रहने पर आर्थिक विकास के ऊँचे दर स्थापित होते है। वृहद उत्पादन पैमाना से प्राप्त अधिक उत्पादन को निम्नांकित चित्र से प्रदर्शित किया जाता है —

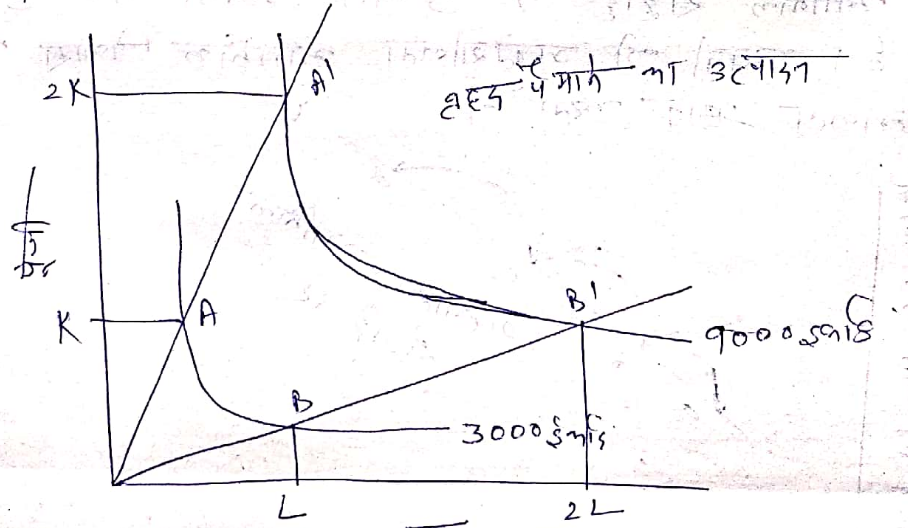

उपर के चित्र में श्रम एवं पूंजी का दो गुना वृद्धि कर उत्पादन में तीन गुना वृद्धि होगी जिससे आर्थिक संवृद्धि में तीव्र वृद्धि होती है।

(6) संसाधनों का कुशलतम उपयोग — उत्पत्ति के साधनों तथा प्राकृतिक संसाधनों की जो भी मात्रा उपलब्ध है उसका कुशलतम उपयोग करके उत्पादन में वृद्धि की जाती है जिससे आर्थिक संवृद्धि दर ऊँचा होगा।

Scanned with CamScanner

(7) तकनीकी प्रगति -

आर्थिक संवृद्धि का केन्द्र बिन्दु तकनीकी प्रगति होती है जो कि नये तकनीक, नये विचार, उत्पादन की नयी विधि, नये-नये खोज तथा नव प्रवर्तन की एक लम्बी श्रृंखला रहते से आर्थिक संवृद्धि में तेजी आती है। इसे निम्न चित्र से प्रदर्शित करते हैं

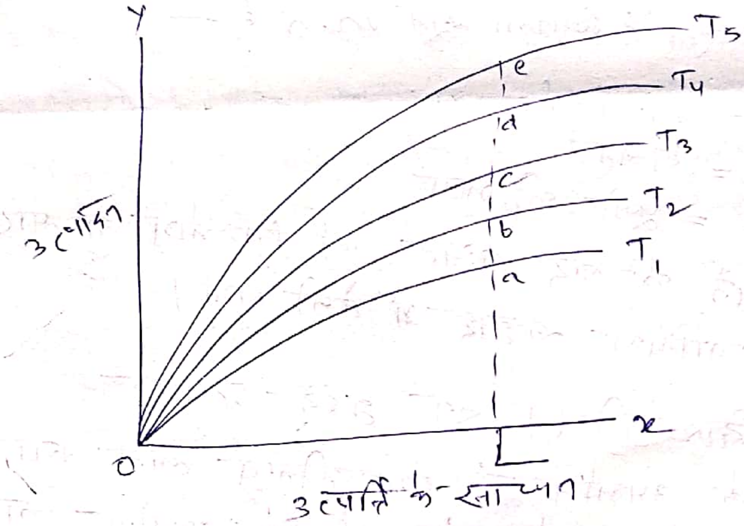

उपर के चित्र में तकनीकी परिवर्तन T_1 से T_2, T_3, T_4, T_5 होने से OL उत्पत्ति के साधन La, Lb, Lc, Ld, Le उत्पादन का रहे हैं जो कार्यकुशलता तथा उत्पादकता में वृद्धि का परिचायक है जो तकनीकी प्रगति से आता है। अतः आर्थिक विकास में तकनीकी प्रगति की प्रत्यक्ष भूमिका होती है।

(8) उद्यमशीलता

अर्द्धविकसित राष्ट्रों में पूँजी की दुर्लभता उतनी नहीं रहती उतना संगठन एवं उद्यमशीलता का अभाव रहता है। शुम्पीटर के अनुसार आर्थिक संवृद्धि में कुशल उद्यमी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उद्यमी की गतिशीलता आर्थिक विकास को गत्यात्मकता प्रदान करता है।

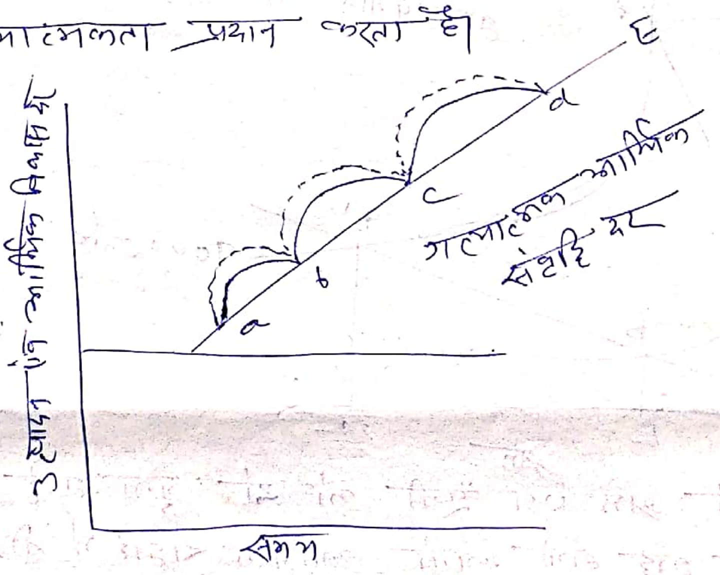

उपर के चित्र में उद्यमी में अगर गत्यात्मकता का गुण है तब उत्पादन में बहुत अधिक वृद्धि होगी, नये नये उत्पादन बाजार में प्रवेश करेंगे और आर्थिक संवृद्धि दर ऊँचा होगा।

(9) तकनीकी चयन एवं रोजगार

भारत में श्रम की अधिकता है इसलिए तकनीकी चयन महत्वपूर्ण प्रश्न है। रोजगार में वृद्धि एवं उत्पादन में वृद्धि दोनों लक्ष्यों को पूरा करने वाले तकनीकी को विकसित किया जाना चाहिए। वैसे श्रम प्रधान तकनीकी की तुलना में पूंजी प्रधान तकनीकी से कुल उत्पादन में अधिशेष (surplus) अधिक प्राप्त होता है।
A. K. Sen महोदय ने निम्न चित्र में दोनों तकनीकों को दर्शाया है।

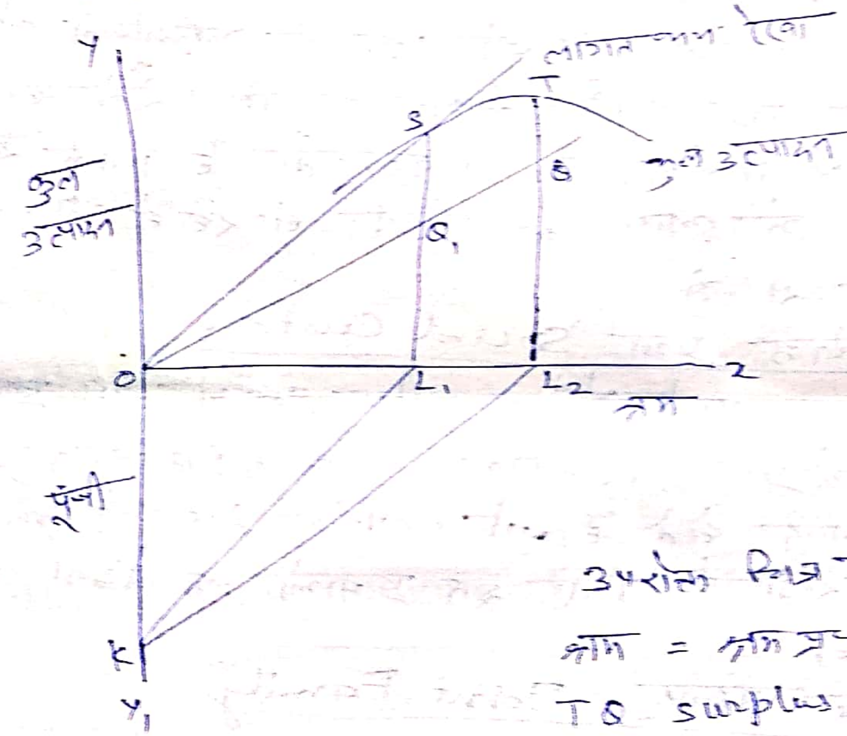

उपरोक्त चित्र में OK पूंजी + OL_2 श्रम = श्रम प्रधान तकनीकी जिससे TB surplus प्राप्त होता है। दूसरी ओर OK पूंजी + OL_1 श्रम = पूंजी प्रधान तकनीकी जिससे SB_1 surplus प्राप्त होता है। यहाँ पूंजी प्रधान तकनीकी से तुलनात्मक रूप से अधिक surplus की प्राप्ति होती है अतः भारत को भी पूंजी प्रधान तकनीकी को विकसित कर आर्थिक संवृद्धि दर को बढ़ाना चाहिए।

(10) विदेशी सहायता

विदेशी सहायता से नवीन तकनीकी का आयात किया जाता है पूंजीगत संसाधनों का आयात कर उत्पादन में वृद्धि किया जाता है खुली अर्थव्यवस्था में आयात निर्यात दोनों आर्थिक संवृद्धि को प्रोत्साहित करते हैं। निर्यात संवृद्धि के लिए विदेशी सहायता को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

Scanned with CamScanner

Non-Economic Factors of Economic Growth

आर्थिक संवृद्धि को प्रभावित करने वाले गैर-आर्थिक कारक निम्नलिखित है -

(1) सामाजिक ~~संस्था~~ कारक Social Factors

सामाजिक कारकों का संबंध लोगों में श्रेणी विभाजन, उनके रीति-रिवाज तथा परस्पर सहयोग से होता है।

सामाजिक कारकों में निम्न बातें आती है -

A. सामाजिक वर्गीकरण Social classification

अर्द्धविकसित राष्ट्रों में कठोर सामाजिक वर्गीकरण की व्यवस्था पायी जाती है जो श्रम की गतिशीलता को अवरुद्ध करती है। तीव्र आर्थिक संवृद्धि के लिए ऐसे सामाजिक ढांचे के निर्माण की आवश्यकता है जिसके सामाजिक संस्थाओं में आधारभूत परिवर्तन हो रहे हो और जातीय बंधन ढीले पड़ रहे हो।

B. सामाजिक प्रथा Social Custom

अर्द्धविकसित राष्ट्रों में सामाजिक प्रथाओं का प्रचलन रहता है जिसमें पर्दा-प्रथा, बाल-विवाह, भूमि के प्रति लगाव, सामाजिक बंधन आदि होते है जो आर्थिक संवृद्धि को अवरुद्ध करते है आर्थिक संवृद्धि के लिए इन प्रथाओं को तोड़ना आवश्यक होता है।

C. संयुक्त परिवार Joint Family

अर्द्धविकसित देशों के परिवार का आकार बड़ा पाया जाता है जिसमें संयुक्त रूप में रहने की प्रवृत्ति रहती है। ~~इस~~ इससे जनसंख्या में तीव्र वृद्धि होती है और प्रच्छन्न बेरोजगारी (Disguised) unemployment को बढ़ावा देती है जो आर्थिक संवृद्धि में बाधक होता है। आर्थिक संवृद्धि के लिए व्यक्तिगत भावना को प्रबल करना जरूरी है।

2. धार्मिक कारक Religious Factors

धर्म आर्थिक संवर्द्धन में सहायक एवं बाधक दोनों ही रहा है। इसलिए आर्थिक संवृद्धि के लिए धार्मिक परंपराओं में परिवर्तन कर एवं धार्मिक विचारों का समावेश किया जाना चाहिए जिसमें अंधविश्वास, संयम आदि न हो ~~बल्कि~~ बल्कि जो कठिन परिश्रम एवं पूंजी निर्माण के भौतिक मुल्यों को बतांए

3. सांस्कृतिक कारक (Cultural Factor)

रेगनर नर्क्से के अनुसार आर्थिक संवृद्धि तथा सांस्कृतिक रुचियों में घनिष्ठ संबंध होता है। अर्द्धविकसित देशों में रूढ़िवादिता, अंधविश्वास, रीति-रिवाज ~~अधिक~~ अधिक होते हैं। आर्थिक संवृद्धि के लिए इनमें क्रान्तिकारी परिवर्तन आवश्यक होता है।

4. राजनीतिक कारक Political Factors

राजनीतिक कारकों को दो वर्गों में बांटा जाता है

(a) अपने देश की राजनीतिक स्थिति

(b) अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक स्थिति

अगर अपने देश की राजनीति स्थिर होगी तथा सरकार की आर्थिक नीति पूंजी विनियोग को प्रोत्साहित करनेवाली होगी तो आर्थिक संवृद्धि को बढ़ावा मिलेगा।

इसीतरह अगर संसार में शांति, समृद्धि, राष्ट्रों के बीच आर्थिक सहयोग की भावना होगी तो आर्थिक संवृद्धि गतिमान रहेगा।

5. अन्य संस्थागत कारक (Other Institutional Factors)

(a) निजी संपत्ति व्यवस्था Private Property institutions

पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में निजी संपत्ति की व्यवस्था रहती है। इससे पूंजी संचय एवं ~~किन~~ विनियोग पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है। जिससे आर्थिक संवृद्धि दर तीव्र हो जाती है।

(b) उद्यमशीलता Entrepreneurial Ship

पूंजी की कमी से भी अधिक बाधक तत्व आर्थिक विकास में उद्यमशीलता का अभाव माना जाता है। अतः आर्थिक संवृद्धि के लिए जातीयता, शिक्षा की कमी आदि को दूर कर व्यापार की सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ानी होगी। ~~विकास आर्थिक~~ तभी आर्थिक संवृद्धि तीव्र होगी।

—×—

By- Dr Sandhya Rani
Maharaja college

Scanned with CamScanner